Himachal Pradesh Forest Department

आज़ादी का अमृत महोत्सव

JICA

परियोजना संवाद पत्र

अंक :10
नवंबर-दिसंबर 2023

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

भीतर :

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- आदर्श स्वयं सहायता समूह की महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर
- ग्राम वन विकास समिति बागी की सफलता की कहानी
- आत्मनिर्भरता की ओर महामाया स्वयं सहायता समूह की महिलाएं
- नाचन वन मंडल के विकास कार्य
- परियोजना से गांव कठोगण में जगी "आशा की किरण"
- ग्राम वन विकास समिति बाड़ी में जल भण्डारण टैंक का निर्माण
- गांव वन विकास समिति थाना में सामुदायिक भवन का निर्माण
- झुंगी वन परिक्षेत्र, में सामुदायिक भवन का निर्माण
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण
- हिमाचल मॉडल को फ़ॉलो करेगा श्रीलंका
- जाइका का हिमट्रेडिशन ब्रांड : मिलेंगे कैमिकल मुक्त उत्पाद
- धर्मपुर के सिद्धपुर में कार्यशाला की धूम
- जाइका वानिकी परियोजना हुई हाईटेक
- मीडिया में प्रोजेक्ट की गतिविधियाँ

परियोजना कार्यालय

टुटू शिमला-11, हिमाचल प्रदेश। दूरभाषः 0177-2838217,
ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से...

-श्रीलंका और जापान में हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना की गूंज-

JICA वानिकी परियोजना का 10वां परियोजना संवाद पत्र आपको सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। नव वर्ष 2024 के आगाज के साथ ही श्रीलंका और जापान जैसे देशों में हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के तहत चल रहे विकास कार्यों की गूंज उठ रही है। हाल ही में 10 से 12 दिसंबर 2023 तक जाइका श्रीलंका और जापान इंडिया की प्रतिनिधियों का सफल दौरा रहा। इस दौरान जाइका श्रीलंका की प्रतिनिधि एवं जेंडर एक्सपर्ट नाकाजीमा और जाइका इंडिया की प्रतिनिधि इनागाकी ने धर्मशाला, रैत, पालमपुर और जोगिंद्रनगर के दूरदराज क्षेत्रों में पहुंच कर यहां के स्वयं सहायता समूहों से सीधा संवाद किया। उन्होंने हिमाचल में विभिन्न स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की सराहना करते हुए कहा कि आने वाले समय में श्रीलंका में चल रहे जाइका वानिकी परियोजना की टीम को हिमाचल में एक्सपोजर विजिट पर लाएंगे। ऐसे में जाहिर है कि हिमाचल प्रदेश में इस परियोजना के तहत हो रहे कार्यों की गूंज विदेशों तक पहुंच चुकी है। जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। परियोजना ने एक लक्ष्य रखा है कि हिमाचल के सभी वन मंडलों मे आउटलैट्स खोले जाएंगे, जहां स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री होगी। बीते दिनों जोगिंद्रनगर और पालमपुर के गोपालपुर में आउटलैट्स का शुभारंभ भी कर दिया गया।

परियोजना के माध्यम से हो रहे जनकल्याण कार्यों की सफलता की कहानियों को इस त्रैमासिक पत्रिका में लेखकों ने बखूबी उकेरा है। परियोजना क्षेत्रों में होने वाले जनकल्याण एवं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से हिमाचल के ग्रामीण इलाकों में स्वरोजगार से सशक्त हो रही महिलाओं की कहानी के बारे में भी लेखकों ने अवगत करवाया है। जाइका परियोजना जन–जन तक पहुंचे यही हमारी कोशिश निरंतर रहती है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य परियोजना क्षेत्रों में सतत वन प्रबंधन द्वारा वन पारिस्थितिकी तंत्र को सुधार करना है। इसके अतिरिक्त परियोजना का लक्ष्य जैव विवधता का संरक्षण, ग्रामीण लोगों की आजीविका में सुधार और संस्थागत क्षमता को बढ़ावा देना है, जिससे प्रदेश के पर्यावरण का संरक्षण एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सके। इस परियोजना के तहत हिमाचल प्रदेश में कुल 460 सूक्ष्म योजनाएं और 920 स्वयं सहायता समूहों को शामिल किया जा रहा है। अभी तक 438 सुक्षम विकास योजनाएं स्वयं सहायता समूहों के व्यावसाय योजना तैयार हो चुके हैं। इन सभी को चरणवद्ध तरीके से कार्यान्वयन किया जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत आर्थिकी में सुधार के लिए स्वयं सहायता समूहों द्वारा लगभग 24 आय सृजन गतिविधियां चलाई जा रही हैं जिनमें मुख्यतः मशरुम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पत्तियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा, सेपू बड़ी, टौर की पत्तलें इत्यादी हैं। प्रसन्नता इस बात की हो रही है कि स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पाद मार्केट में अच्छा खासा प्रतिक्रिया प्राप्त कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप पिछले एक–डेढ़ वर्ष में लगभग 1.40 करोड़ रुपये की बिक्री दर्ज की गई है।

मैं परियोजना में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं और आशा करता हूं कि वे इसी मनोबल के साथ परियोजना को सफल बनाने में योगदान देते रहेंगे।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया (भा.व.से.)

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका

परिवार का सहारा बनी आदर्श स्वयं सहायता समूह की महिलाएं

जाइका द्वारा हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के आजीविका सुधार मिशन के अंतर्गत गठित किये गये स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आत्म निर्भर बनने में सार्थक साबित हो रही हैं। समूह की महिलाएं अपना रोजगार कर न सिर्फ अपने आप को आत्मनिर्भर बना रही है बल्कि वह अपने परिवार का भी सहारा बनी है।

आदर्श स्वयं सहायता समूह आदर्श का गठन मार्च 2022 में जाइका परियोजना की मदद से किया गया। समूह में प्रधान, सचिव, कोषाध्यक्ष, सहित 15 सदस्य है। समूह की महीने में एक बैठक होती है जिसमे प्रत्येक महिला 100 रूपए का योगदान करती है समूह बनने के बाद से समूह परियोजना अधिकारी व कर्मचारियों की सहायता से बिना किसी रूकावट के आगे बढ़ रहा है।

आय अर्जित करने के लिए आदर्श स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा स्वैच्छिक रूप से बैठक में प्रस्ताव पारित करके खड्डीयों में बुनाई के काम को चुना गया। जिसमे जाइका परियोजना द्वारा 75% अनुदान पर खडियां प्रदान की गई। परियोजना द्वारा महिलाओं को 24 जनवरी 2023 में 45 दिनों की बुनाई की ट्रेनिंग भी दी गई। इसके अलावा परियोजना द्वारा समूह के लिए 1 लाख की परिक्रामी निधि (Revolving fund) का भी प्रावधान किया गया।

समान्यत घर पर होने वाले काम जैसे बच्चों को पढाना, स्कूल भेजना, पशुओं के चारे की व्यवस्था करना, व घर की साफ – सफाई जैसे कार्यों को करने के बाद महिलाओं को जितना भी समय मिल रहा है। उसमें महिलाऐं हर दिन काम कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओं ने मई माह में 26000 रूपए के कुल्लुवी टोपी के बौडर बेचे और जून माह में 28000 और अगस्त माह में 46000 के कुल्लुवी टोपी के बौडर, कुल्लुवी स्टाल और कुल्लुवी पट्टू को बेच कर अपनी आय में वृद्धि की। आय सृजन गतिविधि का लाभ समूह के बैंक खाते में भेजा जाता है जिसके वाद समूह की महिलाऐं आपस में पैसों को बांट देती है।

महिलाऐं आपस में नाममात्र ब्याज दर पर ऋण का लेन–देन भी करती है। जिससे महिलाऐं आपात स्वस्थय सेवा व अन्य छोटे–छोटे कार्यों के लिए समूह से विना झिझक ऋण लेती हैं, और तय सीमा पर वापिस भी करती है। जिसके चलते महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही है और वह स्वाभिमान के साथ जी रही है, इन महिलाओं को देखकर गाँव की अन्य महिलाऐं भी समूह के साथ जुड़ने की इच्छुक है।

समूह में आ रही समस्या को हल करते JICA अधिकारी

समूह की महिलाएं अपनी मासिक आय का ब्यौरा लिखते हुए

सच में जाइका परियोजना द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर सशक्त किया है, महिलाऐं सशक्त होगी तो परिवार सशक्त होगा, परिवार सशक्त होगा तो देश सशक्त होगा। यही परियोजना की परिकल्पना है ।

शुभम
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक
वन्यजीव परिक्षेत्र मनाली

ग्राम वन विकास समिति बागी की सफलता की कहानी

बागी गांव 18वीं शताब्दी में अस्तित्व में आया। यह गांव 1745 ई. में पोल्लू द्वारा बसाया गया था। जिनके बारे में कहा जाता है कि वे पूर्वी जुब्बल एस्टेट के सुनपुर हाटकोटी से आए थे। यह आर्य मार्शल जाति से संबंधित है। जिसे स्थानीय तौर पर खशिया के नाम से जाना जाता है।

हिमाचल प्रदेश जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संस्था (HP JICA) वानिकी पहल के तहत कार्यान्वित VFDS बागी परियोजना ने बागी वार्ड में मंदिर परिसर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। इस परियोजना का उद्देश्य मंदिर परिसर के बुनियादी ढांचे और सौंदर्य शास्त्र को बढ़ाना स्थानीय समुदाय और पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्रदान करना। सामुदायिक विकास कार्य के लिए 500,000 की राशि को वित्तीय वर्ष 2021–22 और 2022–23 और में दो किश्तों में खर्च किया गया।

बागी वार्ड में मंदिर परिसर स्थानीय समुदाय के लिए गहरा सांसतिक और धार्मिक महत्व रखता है। हालाँकि, सीमित संसाधनों और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे के कारण, मंदिर को पर्यटकों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन मुद्दों को संबोधित करने और सांसतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए, मंदिर परिसर के पुनरुद्धार और सुधार के लिए वीएफडीएस बग्गी परियोजना शुरू की गई थी।

नवीनीकरण और पुनरुद्धारः परियोजना ने मंदिर परिसर को सफलतापूर्वक पुनर्निर्मित और पुनर्स्थापित किया, जिससे इसे एक ताजा और आकर्षक रूप दिया गया। जर्जर संरचनाओं की मरम्मत की गई, और मंदिर की दीर्घायु सुनिश्चित करने के लिए समग्र बुनियादी ढांचे को मजबूत

किया गया।

सौंदर्य संवर्धन: यह परियोजना मंदिर परिसर के सौंदर्यशास्त्र को बढ़ाने पर केंद्रित है। हरे–भरे बगीचों, सजावटी पौधों और पक्के रास्तों को शामिल करते हुए सुंदर दृश्य बनाया गया। इसने पर्टयकों के लिए एक शांत और श्य रूप से सुखद वातावरण तैयार किया। सामुदायिक सहभागिता: परियोजना की सफलता का श्रेय स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी को दिया गया। बागी वार्ड के लाभार्थियों ने परियोजना की योजना, कार्यान्वयन और रखरखाव में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके सहयोग और समर्पण ने परियोजना की सफलता में योगदान दिया। हिमाचल प्रदेश जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संस्था (HP-JICA) वानिकी पहल के तहत कार्यान्वित ग्राम वन विकास समिति बागी परियोजना ने बागी वार्ड में मंदिर परिसर को सफलतापूर्वक बदल दिया। बुनियादी ढांचे और सौंदर्यशास्त्र में सुधार ने न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया है बल्कि पर्टयकों को बेहतर अनुभव भी प्रदान किया है। परियोजना की सफलता का श्रेय स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी को दिया जा सकता है, जिन्होंने परियोजना के लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। पुनर्निर्मित मंदिर परिसर अब सामुदायिक गौरव, आध्यात्मिक महत्व और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में काम करता है।

नरेंद्र कुमार

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक

वन परिक्षेत्र कांडा वन मण्डल चौपाल

आत्मनिर्भरता से सशक्तिकरण की ओर महामाया स्वयं सहायता समूह की महिलाएं

स्वयं सहायता समूह की महिलाएं प्रशिक्षण के दौरान

महामाया स्वयं सहायता समूह की महिलायों का सामूहिक चित्र

वन विभाग की जायका परियोजना के तहत सुकेत वन मंडल की सुकेत वन परिक्षेत्र के अन्तर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति भंगलेरा के महामाया स्वयं सहायता समूह की महिलाएं बैग बनाकर और सिलाई कटाई का काम करके अपनी आर्थिकी सुदृ कर रही हैं।

महामाया स्वयं सहायता समूह का गठन 27 अगस्त 2020 को हुआ जिसमें 12 महिलाएं जुड़ी हैं, जो प्रति माह 50 रूपये मासिक बचत करती हैं समूह की प्रधान श्रीमति हिमावती और सचिव श्रीमति मंजू है।

समूह की महिलाओं ने अपनी आर्थिकी को

सुधारने के लिए कटाई सिलाई और बैग बनाने की गतिविधि को चुना तथा समूह की महिलाओं ने परियोजना के कर्मचारियों व् अधिकारियों की मदद से इस गतिविधि की व्यवसाय योजना तैयार की। समूह की महिलाओं जायका परियोजना के माध्यम से बैग बनाने का प्रशिक्षण 14 नवम्बर 2022 से 12 दिसंबर 2022 तक 28 दिनों का और कटाई सिलाई का 16 दिसंबर 2022 से 12 जनवरी 2023 तक 28 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया गया इस प्रशिक्षण में उन्हें अलग अलग प्रकार के बैग बनाना और सूट की कटाई और सिलाई आदि काम सिखाए गए।

प्रशिक्षण के बाद महिलाओं को अच्छी आमदनी हो रही है। महामाया स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण के बाद रु0 50720/- आमदनी की, जिसमें वे अपनी आजीविका को लगातार बढ़ा रही हैं और आगे भी इसी काम को करने का प्रण ले चुकी है।

ये महिलाएं अपने घर के काम के साथ साथ इस कार्य को कर रही हैं। इस कार्य को कर के अपनी आजीविका को बढ़ा रही हैं।

महामाया स्वयं सहायता समूह की सदस्य राधा ने अपने गाँव में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उत्ष्ट कार्य किया। जिसके बाद वह मास्टर ट्रेनर के रूप में विभिन्न समूहों में प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही है राधा ने वन मण्डल धर्मशाला, नूरपुर और बिलासपुर के अनतर्गत परियोजना के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिया, जो कि उसके लिए अतिरिक्त रोजगार का साधन बना जिसके लिए वो जायका परियोजना का धन्यवाद करती है ।

सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध के बाद बैग की मांग बढ़ रही है। महिलाएं बैग दुकानों, स्कूलों, मेलों में बेच रही हैं तथा आर्डर पर भी बना रही है। इस तरह से समूह की महिलाएं जायका परियोजना को धन्यवाद करती हैं कि जायका परियोजना के तहत वो आत्म निर्भर बन पाई और स्व–रोजगार को भी बढ़ावा मिला है।

ऋतु गुप्ता

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक,

सुकेत वन परिक्षेत्र सुकेत वन मंडल

नाचन वन मंडल के विकास कार्य

वन मंडल नाचन के वन परिक्षेत्र नाचन की सभी ग्राम वन विकास समितियों के साथ सामूहिक बैठक वन विश्राम गृह चैलचौक में अयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य ग्राम वन विकास समितियों के उपनियमों अभिलेखों के रखराखाव और निधि प्रवाह तंत्र के बारे में विस्तार से चर्चा करना था। इसके अतिरिकत वीएफडीएस को अवंतीतविभीन वृक्षा रोपण गतिविधियों के उद्देश्य पर चर्चा की गई और संबंधित गतिविधियों के लिए समय पर सभी नियमों का पालन करने के लिए दिशा निर्देश दिए गए। बैठक में श्री एस.एस. कश्यप वन मंडल अधिकारी नाचन, वन परिक्षेत्राधिकारी नाचन, वनखंड अधिकारी, वनरक्षक, एसएमएस सहित वन विभाग और प्रोजेक्ट के अन्य कर्मचारी तथा ग्राम वन विकास समितियों के सदस्य मौजुद रहे।

आजीविका सुधार कार्यक्रम

आजीविका सुधार कार्यक्रम

वन मंडल और वन परिक्षेत्र नाचन में गठित ग्राम वन विकास समिति सतयोग के स्वयं सहायता समूह जयदेव बन्यूरी और ग्राम वन विकास समिति सैंज के स्वयं सहायता समूह जय कश्मीरी माता को खाद्य प्रसंस्करण (आचार और चटनी) का प्रशिक्षण (20–05–2022 जव

26–05–2022) दिया गया। साथ ही उन्हें संगठित रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण के उपरांत समूह द्वारा बनाये गये विभिन प्रकार के आचार बाज़ार में बिकने के लिए तैयार है। इससे समूह के सदस्यों के आत्मविश्वास को नयी ऊर्जा मिली है, तथा जयदेव बन्यूरी, स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने 70000 रूपए और स्वयं सहायता समूह जय कश्मीरी माता के सदस्यों ने

जय देव बन्यूरी, स्वयं सहायता समूह, सतयोग

क्रमांक	सदस्यों की संख्या	कुल व्यय	कुल आय	लाभांश
1	10	35500	89815	54315

जय कश्मीरी माता, स्वयं सहायता समूह, सैंज

क्रमांक	सदस्यों की संख्या	कुल व्यय	कुल आय	लाभांश
1	10	24250	54200	29950

सामुदायिक विकास कार्य

जायका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन मंडल नाचन के वन परिक्षेत्र नाचन की वन बीट मछरोट में सिंचाई के लिए जल भण्डारण टैंक का निर्माण किया गया। जिसकी क्षमता 15000 लीटर है। इस टैंक के निर्माण से लगभग 120 ग्रामीणों को लाभ मिलेगा।

54200 रूपए का आचार बाज़ार में बेचा।

वन पारिस्थितिकी में सुधार

जाइका वानिकी परियोजना के संयोजन से वनों के सुधार के लिए कई कदम उठ गए हैं, उन्हीं में से एक है वन विभाग की नर्सरी का आधुनिकीकरण करना साथ ही उन में तैयार किये गए नए और बेहतर पौधों का जंगलों में रोपन का कार्य किया जा रहा है। नाचन वन मांडल के नाचन वन परिक्षेत्र के सत्ययोग और स्यांज ग्राम वन विकास समिति के कोटलू वृक्षारोपण क्षेत्र में 95% वृक्षा रोपण जीवित है। जो कि वीएफडीएस के लोगों द्वारा ही संभव हो पाया है। समय–समय पर लोगों और विभाग के प्रयासों से यहां एक बेहतर जैव विविधता वाला वन तैयार हो रहा है।

दीपिका गुलेरिया

विषय वस्तु विशेषज्ञ

(वानिकी और जैव विविधता)

वन मंडल नाचन

परियोजना से गांव कठोगण में जगी 'आशा की किरण'

वन परिक्षेत्र सरकाघाट, भदरोता के टिक्कर पंचायत गांव कठोगण बहुत ही सुन्दर व प्रतीक रुप से समृद्ध है इस वार्ड में जाईका परियोजना का कार्यवहन 29 जुलाई 2020 में आरम्भ हुआ प्रारम्भिक मिली जुली प्रक्रिया के उपरान्त 14 अगस्त 2020 में इस वार्ड में परियोजना द्वारा विभिन्न कार्य किये जा रहे है जहां एक ओर प्रबन्धन एवं विकास समुदाय के सक्रिय योगदान से किसानों को हर सम्भव प्रगति को सुनिश्चित किया जा रहा है। वहीं दुसरी ओर महिलाओं को सगठित कर लघु बचत के साथ साथ अतिरिक्त आय के संसाधनो के अवसर उपलब्ध करवाकर महिला सशक्तीकरण व स्वावलबंन की ओर कदम बढ़ाये जा रहे है।

परियोजना का मुख्य घटक आजीविका संवर्धन के तहत एक ऐसी किरण नैना माता स्वंय सहायता समुह एवं समान रुची समुह (सी0आई0जी0) का गठन किया इस समुह में आठ सदस्य है जिसमें चार महिलायें निर्धन परिवार से व दो महिलायें अनुसुचित जाति से सम्बन्धित है इस समुह की सभी सदस्य निजी रुप से कटाई सिलाई का कार्य करती है वार्ड स्तर पर होने वाली बैठकों से समुह ने परियोजना में होने वाली आजीविका वर्धन गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की परियोजना के सरल साधारण तरीके से प्रभावित होकर इन महिलाओ ने सगंठित होकर अपनी अजीविका वर्धन गतिविधि के लिये कटाई सिलाई को ही चुना समुह के उत्पादन व रुची को देखते हुये समुह का एक समान रुची समुह बनाकर समुह को परियोजना द्वारा एक महीने का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें नये फैशन के मुताबिक विभिन्न–विभिन्न डिजाईनों वाले सुट इत्यादि बनाने सिखाये गये समुह के स्व– आंकलन के अनुसार यह महिलाये एक महीने में 6–7 सुट ही तैयार कर पाती थी लेकिन प्रशिक्षण के बाद अब एक महिला 10–15 सुट तैयार कर देती है और समुह औसतन 50–60 सुट लेडीज, जैन्टस व बच्चों के सुट इत्यादि तैयार कर रही है पहले एक सुट से एक महिला 250 रुपये कमा लेती थी परन्तु अब प्रशिक्षण के बाद समुह की एक महिला 10–15 सुट के हिसाब से 5000/– रुपये बडे आराम से कमा लेती है नैना स्वंय सहायता समुहध् समान रुची समुह की महिलाओ ने 1 सितम्बर 2022 से लेकर 2023 तक 62500/– रुपये एक साल में कमा लिया है।

समुह की प्रधान श्रीमती रीना देवी के अनुसार एक छोटे से समुह को यदि शक्ति मिली है तो परियोजना द्वारा दिये गये प्रशिक्षण से यही हमारी एकता का आधार सतम्भ है जब नैना माता स्वंय सहायता जैसा समुह स्वरोजगार से परिपुर्ण समान रुची समुह अपनी अजीविका बढाने में सक्षम हुआ है। अतः मेरा विश्वास है कि ऐसी परियोजनाएं कई गरीबों का उद्धार करेगी।

सरला देवी

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई सरकाघाट

वन मंडल सुकेत

ग्राम वन विकास समिति बाड़ी में जल भण्डारण टैंक का निर्माण

बाड़ी गांव, हिमाचल प्रदेश: **HP JICA** वनिकी परियोजना के तहत बाड़ी ग्राम वन विकास समिति ने एक महत्व पूर्ण पानी संचयन योजना को सफलता पूर्वक पूरा किया है, जिससे गांव के लोगों को विकास की ओर एक महत्व पूर्ण कदम आगे बढ़ने में मदद मिली। इस प्रोजेक्ट की शुरुआत में, बाड़ी गांव के स्थानीय वन विकास समिति ने गांव की जल भण्डारण की आवश्यकता को पहचाना और एक योजना तैयार की। उन्होंने गांव के लोगों को जागरूक किया और सहमति प्राप्त की, और इस काम के लिए समुदाय के सदस्यों की एकता और साझेदारी को मजबूत किया।

इस प्रक्रिया के दौरान, बाड़ी गांव में एक जल भण्डारण टैंक निर्मित हुआ, जिसमें पर्याप्त पानी की मात्रा संचित की जा सकती है। यह टैंक गांव के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन के जीवन के लिए एक स्वावलंबी स्रोत प्रदान करता है।

इस जल भण्डारण टैंक का निर्माण वर्ष 2021–22 में किया गया, जिससे गांव के लोगों के जीवन में सुधार और अधिक समृद्धि आई है। इस टैंक की विशेषज्ञता की बात करते हुए, इस की क्षमता 25,000 लीटर है और इसके निर्माण के लिए 2,50,000 रुपए की निवेश की गई है। इसके माध्यम से, गांव के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन गया है, जो उन के जीवन को सुखद और सामृद्ध बनाने में मदद कर रहा है, और कृषि क्षेत्र में भी सुधार हुआ है।

इस भण्डारण टैंक के लिए निर्माण राशि **HP JICA** वनिकी परियोजना द्वारा प्रदान किया गया था, और इस जल भण्डारण टैंक के निर्माण का प्रमुख उपयोजन कर्ता बाड़ी गांव के लगभग 25 घरों के है। **HP JICA** वनिकी परियोजना ने इन स्थानीय लाभार्थियों को इस पानी संचयन योजना के तहत सहयोग और वित्तीय सहायता प्रदान की ताकि वे इस प्रोजेक्ट के माध्यम से जलसंचयन की गई मात्रा का लाभ उठा सकें । इन लाभार्थियों ने इस प्रोजेक्ट के माध्यम से पानी भण्डारण टैंक के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाई और सामुदायिक विकास के साथ मिलकर गांव के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

मुख्य रूप से भंडारित जल का उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए होता है:

1. जल को पीने के लिए उपयोग किया जाता है, जिससे लाभार्थियों को सुरक्षित और स्वच्छ पीने का पानी उपलब्ध होता है।
2. जल का उपयोग रसोई में खाना पकाने के लिए किया जाता है।
3. जल का उपयोग घर के लाभार्थियों के स्नान और स्वच्छता की आवश्यकताओं को पूरा करने

में मदद करता है, जिससे उनका स्वास्थ्य और स्वच्छता बनी रहती है।

4. जल का उपयोग खेतों की सिंचाई के लिए किया जाता है, जिससे किसान अपनी पौधों को सहारा देते हैं और षि उत्पादन में सुधार होता है।
5. पानी का उपयोग जल विवादों को दूर करने और कृषि परियोजनाओं के लिए पानी सप्लाई करने के लिए किया जाता है।

इस तरह, यह पानी भण्डारण टैंक घरेलू उपयोगों को प्राथमिक रूप से पूरा करता है, जबकि षि के उपयोगों के लिए यह द्वितीय रूप से प्रयुक्त होता है, जिससे स्थानीय किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बनता है।

इस पानी भण्डारण टैंक का उपयोग घरेलू उपयोगों के लिए प्रमुख रूप से हो रहा है, जबकि कृषि के उपयोगों के लिए यह द्वितीय रूप से प्रयुक्त होता है। इससे स्थानीय किसानों को जल सप्लाई और षि उत्पादन में सुधार करने का मौका मिलता है, और यह गांव के लोगों के जीवन को सुखद और सामृद्ध बनाने में मदद करता है।

अंत में, बाड़ी गांव में इस जल संचयन टैंक की सफल कहानी, **HP JICA** वन संवर्द्धन परियोजना द्वारा वित्त पोषित, समुदाय द्वारा चलाई गई विकास की प्रेरणास्पद उदाहरण के रूप में सेवा करती है। यह दिखाती है कि एक एकजुट समुदाय, **HP JICA** जैसे पहलों के समर्थन से, किसी भी चुनौती को पार कर सकता है, अपनी आजीविका में सुधार कर सकता है, और एक सतत और समृद्ध भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकता है। इस टैंक का काम सिर्फ घरेलू आवश्यकताओं को ही संतुष्ट करने के लिए ही नहीं है, बल्कि कृषि कार्यों में सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, घरेलू और किसानों दोनों को लाभ पहुंचाता है। अतः मेरा विश्वास है कि ऐसी परियोजना कई गरीबों का उद्धार करेगी ।

विशाल वर्मा

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक,

पतलीकूहल वन मंडल कुल्लू

गांव वन विकास समिति थाना में सामुदायिक भवन का निर्माण

वीएफडीएस थाना ने ज्ञान वर्मा, वीएफडीएस प्रधान की अध्यक्षता में एक आम सभा की बैठक आयोजित की और एक प्रस्ताव पारित किया गया। जिसमें विस्तार से चर्चा की गई कि उनके स्थानीय देवताओं, स्थानीय मेलों, आदि को ध्यान में रखते हुए उनके क्षेत्र में सही बैठने की स्थिति नहीं है, क्योंकि थाना गांव के अधिकांश लोगों ने अपने खेतीबाड़ी क्षेत्रों के आस–पास अपने घर बना लिए हैं। हालांकि, जायका परियोजना ने उन्हें सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 5,00,000 रुपये की राशि प्रदान की थी, लेकिन गांव वालों का अनुमान था कि निर्माण की लागत लगभग 15,00,000 रुपये होगी। जिसे फिर वीएफडीएस थाना के प्रत्येक सदस्य ने अपना योगदान दिया तथा 10,00,000 रुपये की राशि जमा की और सफलतापूर्ण रूप से उनके क्षेत्र मंक एक सुंदर सामुदायिक हॉल का निर्माण किया।

डॉ. अभय महाजन

विषय वस्तु विशेषज्ञ

(वानिकी और जैवविविधता)

वन मंडल ठियोग

झुंगी वन परिक्षेत्र, में सामुदायिक भवन का निर्माणबंदली-।।

वार्ड ग्राम पंचायत बंदली का वार्ड है। यह वार्ड अपनी प्रातिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। इस वार्ड के साथ ट्रैछ जंगल लगता है तथा इस जंगल में ट्रैछ देवता का स्थाई वास है । जो इसकी सुंदरता को चार चाँद लगाते है। जब जायका वानिकी परियोजना झुँगी वन परिक्षेत्र में बैच –।। में चलाई गई तो, चयन मानदंड के अनुसार इस वार्ड का भी चयन हुआ।

वार्ड में 43 परिवार हैं जिनमें से 36 परिवार परियोजना के साथ जुड़ें हैं। फिर इस वार्ड में बंदली–।। ग्रामीण वन विकास समिति का गठन परियोजना कर्मचारी व वनविभाग के कर्मचारी द्वारा किया गया । जिसके लिए वार्ड में ग्राम सभा का आयोजन किया गया। लोगों द्वारा कमेटी का गठन किया गया और प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया। फिर कमेटी को सोसाइटी एक्ट के तहत उप प्रभागीय न्यायाधीश कार्यालय में पंजीत करवाया गया। कमेटी का गठन होने के बाद वार्ड में लोगों के साथ बैठ कें की गई। उन बैठकों में गाँव के लोगों के द्वारा बताया गया कि उन्हे एक सामुदायिक भवन की वार्ड में जरूरत है ताकि जब भी कोई बैठक वार्ड स्तर की जाए तो लोगों के पास बैठने की जगह उपलब्ध हो।

वर्ष 2022–23 में परियोजना द्वारा सामुदायिक कार्य के तहत पांच लाख की राशि ग्रामीण वन विकास समिति बंदली–।। को जारी की गयी। जिससे समिति के सदस्यों के द्वारा सामुदायिक भवन का निर्माण कार्य करवाया गया। आज समिति की मासिक बैठक व समिति में बने स्वयं सहायता समूह तथा गाँव की अन्य सार्वजनिक बैठकें भी यहाँ पर कर वाई जाती हैं। लोगों द्वारा इसमें अंशदान के द्वारा अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित की गयी। लोंगो ने इस कार्य के लिए जायका वानिकी परियोजना का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्य से उन्हें काफी लाभ हुआ है।

सुरेश कुमार

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, झुंगी वन मंडल सुकेत

संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चौथे चरण की 458 ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता प्रबन्धन समितियों उप समितियों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 458 वी0एफ0डी0एस0, 22 वन मण्डलों के 72 वन परिक्षेत्रों व 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता प्रबन्धन समिति उप समितियों का गठन हो चुका है और 440 वन विकास समितियों की सूक्ष्म योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं। 18 ग्राम वन विकास समितियों के सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ की गई है।

आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण

सूक्ष्म योजना तैयार करते समय अनेक आयसृजन गतिविधियां सामने आई हैं। अनेक बैठकें आयोजित की गई और विस्तृत वार्तालाप किया गया ताकि औपचारिक स्वयं सहायता समूहों और समान रूचि समूहों को सक्रिय बनाया जा सके। उनकी लिखित सहमति ली गई। उनके चुनाव करवाए गए तथा उन्हें अपने प्रतिनिधियों, नियमों और विनियमों का चुनाव करने के लिए कहा गया। परियोजना के अंतर्गत 764 स्वयं सहायता समूह और समान रूचि समूह बनाये गए हैं। समूहों के बैंक खाता खुलवाया गया तथा समूह का मासिक योगदान शुरू किया गया। नेतृत्व, कार्यवाही लेखन, लेखा–जोखा रखने, आपसी लोनिंग आदि बारे में 560 समूहों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। खुम्ब की खेती, हैंडलूम, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, बुनाई, आचार, पत्तल, बैग बनाना, सिरा–बड़ी आदि बनाने की 691 व्यावसायिक योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं और कार्य भी शुरू किया। बहुत स्वयं सहायता समूह ने अपने उत्पाद का उत्पादन शुरु कर चुके हैं और अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं।

हिमाचल मॉडल को श्रीलंका करेगा फॉलो

जाइका वानिकी परियोजना को अब भारत का पड़ोसी देश श्रीलंका भी फॉलो करेगा। हाल ही में 10 से 12 दिसंबर 2023 तक हिमाचल दौरे पर पहुंची जाइका श्रीलंका की प्रतिनिधि एवं जेंडर एक्सपर्ट नाकाजीमा ने यह बात कही। उन्होंने जिला कांगड़ा के रैत में आयोजित कार्यशाला के दौरान विभिन्न स्वयं सहायता समूहों को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल में जाइका वानिकी परियोजना बेहतर कार्य कर रही है। नाकाजीमा ने कहा कि हिमाचल में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं श्रीलंका की तुलना में अच्छा काम कर रही है। वे यहां की महिलाओं की भागीदारी देख नाकाजीमा काफी उत्साहित हुई। उन्होंने यहां उपस्थित विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं एवं पुरुषों से वन–टू–वन बात की। इस दौरान उन्होंने श्रीलंका में जाइका के तहत हो रहे कार्यों को सांझा किया। नाकाजीमा ने कहा कि आने वाले समय में जाइका श्रीलंका की टीम हिमाचल में एक्पोजर विजिट करेगी। इसके साथ–साथ हिमाचल के स्वयं सहायता समूहों को जापान में एक्सपोजर विजिट का ऑफर भी दिया। उन्होंने हिमाचल के बेहतरीन कार्य करने वाले स्वयं सहायता समूहों को जापान में एक्सपोजर विजिट का ऑफर भी दिया।

नागेश गुलेरिया की टीम कर रही बेहतर कार्य

नाकाजीमा ने कहा कि परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया के नेतृत्व में हिमाचल में बेहतरीन कार्य हो रहे हैं। जाइका इंडिया की प्रतिनिधि इनागाकी ने भी महिलाओं को सशक्तिकरण का पाठ पढ़ाया। 10 दिसंबर 2023 को जिला कांगड़ा के रैत में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना की गूंज आज जापान के साथ–साथ श्रीलंका तक पहुंच चुकी है। उन्होंने कहा कि हिमाचल के ऐसे स्वयं सहायता समूह जो बेहतर कार्य करेंगे उन्हें जापान में एक्पोजर विजिट पर भी ले जा सकते हैं। नागेश कुमार गुलेरिया ने जापान की प्रतिनिधियों को अवगत करवाया कि आने वाले समय में प्रदेश के सभी वन मंडलों में आउटलैट खोले जाएंगे। इसका सिलसिला जारी है। नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि जल्द ही एक आउटलैट धर्मशाला में भी खोला जाएगा। रैत में आयाजित कार्यशाला में मौजूद विभिन्न सहायता समूहों के कार्यों को देख नागेश कुमार गुलेरिया ने खूब तारीफ की।

–आरपी नेगी,
(मीडिया स्पेशलिस्ट)

जाइका का अपना ब्रांड हिमट्रेडिशनः मिलेंगे कैमिकल मुक्त उत्पाद

जाइका वानिकी परियोजना के तहत विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पाद अब पालमपुर के गोपालपुर और जिला मंडी के जोगिंद्रनगर में भी खरीदने को मिलेंगे। हाल ही में जाइका श्रीलंका की प्रतिनिधि एवं जेंडर एक्सपर्ट नाकाजीमा और जापान इंडिया की प्रतिनिधि इनागाकी ने गोपालपुर और जोगिंद्रनगर में में आटलैट्स का शुभारंभ किया। इस अवसर पर जाइका वानिकी परियोजना के

मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने पूजा–अर्चना के साथ आउटलैट का शुभारंभ किया। बता दें कि गोपालपुर चिड़ियाघर के मुख्य द्वार पर स्थापित इस मार्केटिंग आउटलैट्स पर जाइका से जुडे स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री होगी। जहां पर ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स उपलब्ध होंगे। जाइका वानिकी परियोजना का अपना ब्रांड हिमट्रेडिशन के तहत इस आउटलैट में ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स, हिमाचली टोपी, शॉल, आचार समेत कई अन्य उत्पादों की बिक्री होगी। नाकाजीमा और इनागाकी ने जाइका के हिमट्रेडिशन ब्रांड की भी तारीफ की।

विनोद शर्मा

(कार्यक्रम प्रबंधक)

ग्रामीण वित्त पोषण एवं विपणन।

धर्मपुर के सिद्धपुर में एक दिवसीय कार्यशाला व प्रदर्शनी की धूम

हिमाचल प्रदेश में जाइका वानिकी परियोजना को शिखर पर पहुंचाने के लिए मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया सराहनीय कार्य कर रहे हैं। यह बात 27 दिसबंर 2023 को जिला मंडी के धर्मपुर के समीप सिद्धपुर में जाइका वानिकी परियोजना द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला एवं प्रदर्शनी के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि एवं स्थानीय विधायक चंद्रशेखर ने कही। यहां एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए

चंद्रशेखर ने मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि नागेश कुमार गुलेरिया ने जाइका वानिकी परियोजना को शिखर पर पहुंचाने का काम कर रहे हैं। विधायक चंद्रशेखर ने कहा कि इस परियोजना को उंचाईयों पर पहुंचाने में सीपीडी नागेश कुमार गुलेरिया ने सराहनीय कार्य किए हैं।

चंद्रशेखर ने कहा कि जाइका प्रोजेक्ट के तहत जुड़े स्वयं सहायता समूह ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स तैयार कर रहे हैं। जो आजीविका कमाने का नया दौर शुरू हो चुका है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के लिए आगामी चार साल चुनौतियों भरा रहेगा। विधायक ने कहा कि जाइका में लोकतांत्रिक प्रक्रिया से काम हो रहा है। सभी स्वयं सहायता समूहों को अधिक से अधिक बिजनेस प्लान तैयार करने को कहा। चंद्रशेखर ने धर्मपुर क्षेत्र में बांस परियोजना के लिए एक करोड़ रुपये के बजट की घोषणा के लिए सीपीडी नागेश कुमार गुलेरिया का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के आगाज से पहले विधायक चंद्रशेखर ने स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों के स्टॉल का अवलोकन किया। उन्होंने जाइका वानिकी परियोजना द्वारा किए जा रहे सभी कार्यों की सराहना की।

मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने अपने संबोधन के माध्यम से लोगों को मशरूम की खेती के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि तीन किस्मों की मशरूम की खेती से लोगों को आजीविका कमाने का मौका मिलेगा। नागेश कुमार गुलेरिया ने यहां मौजूद स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों ने सीधा संवाद किया। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना पिछले पांच वर्षों से हिमाचल में आजीविका सुधार के साथ–साथ ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए कार्य कर रही है। नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना के तहत प्रदेश में 920 स्वयं सहायता समूहों का गठन करने का लक्ष्य है, जिसमें से वर्तमान में 878 स्वयं सहायता समूहों का गठन हो चुका है। जो कई उत्पाद निर्मित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में परियोजना की गतिविधियों को और अधिक बढ़ाने की जरूरत है।

आरपी नेगी
(मीडिया स्पेशलिस्ट)

जाइका वानिकी परियोजना हुई हाईटैक, अब ड्रोन से निगरानी

जाइका वानिकी परियोजना अब हाईटैक हो चुकी है। परियोजना के तहत होने वाली सभी गतिविधियों पर ड्रोन से निगरानी की जाएगी। पौधरोपण, जंगलों में आग लगने की घटना समेत प्रोजेक्ट के अंतर्गत हो रहे हरेक कार्यों को ड्रोन के माध्यम से कड़ी नजरें रखी जाएंगी। जाइका वानिकी परियोजना की जीआईएस की टीम ने बीते दिनों शाहपुर रेंज और रोहड़ू वन मंडल के सरस्वतीनगर वन परिक्षेत्र में ड्रोन से सर्वे किया गया।

बताया गया कि जाइका वानिकी परियोजना के तहत किए गए कार्यों को ड्रोन में कैद किया जा रहा है। इसके साथ–साथ जंगलों में आग लगने की घटना का भी पता लगा सकते हैं कि आग लगने से वन संपत्तियों के नुकसान का रियल टाइम और आग पर काबू पाने के लिए मौके पर पहुंचने के लिए क्या कुछ इंतजमाम होने चाहिए। सभी ग्राम वन विकास समितियों के दायरे में हुए कार्यों को ड्रोन के माध्यम से कैद किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया के दिशा–निर्देशानुसार आने वाले दिनों में राज्य के अन्य ऐसे क्षेत्रों में ड्रोन तकनीक से प्रोजेक्ट के कार्यों की स्टीक प्लानिंग की जाएगी।

– रजनीश कुमार,
(प्रोग्राम मैनेजर) जी.आई.एस।

कैमरे में कैद प्रोजेक्ट्स की गतिविधियां

परियोजना की नर्सरियों का निरीक्षण करती जाइका श्रीलंका की प्रतिनिधि एवं जेंडर एक्सपर्ट नाकाजीमा और जाइका इंडिया की प्रतिनिधि...

जिला मंडी के दूरदराज गांव जनवान में स्वयं सहायता समूहों से सीधा संवाद करने पहंची नाकाजीमा और इनागाकी

मीडिया में जाइका वानिकी परियोजना

मशरूम की पैदावार कर लाखों की कमाई कर रहीं महिलाएं

उत्तम हिन्दू

विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया को करवाया जाइका परियोजना के कार्यों से अवगत

जाइका वानिकी परियोजना ने आपदा राहत कोष में दान किए 1 लाख रुपए

जाइका प्रोजेक्ट से शीत मरुस्थल में आ रही हरियाली

किन्नौर के श्यासो गांव में बना 76 हजार लीटर की क्षमता वाला वाटर स्टोरेज टैंक, स्थानीय जनता ने श्रमदान से भी दिया निर्माण कार्य में सहयोग

बागवानों को मिली सिंचाई की बेहतर सुविधा

उद्यमी बनकर आर्थिक स्थिति को मजबूत करें ग्रामीण : पठानिया

जाइका प्रोजेक्ट की मदद से शीत मरुस्थल हो रहा हरा-भरा

पत्तल बनाकर महिलाएं बन रहीं आत्मनिर्भर

रोहड़ू में जायका परियोजना के सफल कार्यान्वयन को लेकर दिए टिप्स

रोहड़ू। जायका वानिकी परियोजना की एकदिवसीय कार्यशाला वन विश्राम गृह रोहड़ू में संपन्न हुई। कार्यशाला की अध्यक्षता अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने की। इस कार्यशाला का आयोजन शिमला वृत में कार्यरत परियोजना के एसएमएस व एफटीयू कोऑर्डिनेटर के लिए किया गया। इस ...

पंजाब केसरी SAT,16 SEPTEMBER 2023 EDITION: MANDI KESARI, PAGE

खाइयों में भरा पानी पौधों के लिए बनेगा संजीवनी

जोगिंदरनगर (अमिता): गुम्मा पंचायत के जनवाण में जायका प्रोजैक्ट के तहत रोपे गए पौधों को नमी मिलती रहे, इसके लिए खाइयां बनाई जा रही हैं। बारिश का पानी इन खाइयों में भरेगा, जो लंबे समय तक पौधों के लिए नमी प्रदान करता रहेगा, जो पौधों को बढ़ने के लिए मददगार साबित होगा। बता दें कि जायका प्रोजैक्ट के तहत जनवाण के जंगलों में हजारों पौधे रोपे गए हैं जिन्हें जिंदा रखने के लिए पहली मर्तबा पौधे की एक मीटर की दूरी पर एक मीटर लंबी व एक फुट गहरी खाई खोदी जा रही है। ग्राम वन विकास समिति जनवाण के प्रधान राम सिंह ठाकुर ने बताया कि जायका प्रोजैक्ट के तहत रोपे गए पौधों के समीप खाइयां खोदी जा रही हैं जिसमें बारिश का पानी भरकर पौधों के लिए नमी का काम करेगा।

जोगिंदरनगर : ग्राम वन विकास समिति जनवाण के प्रधान लोगों के साथ खाइयां बनाते हुए।

लवी में महकी ऑर्गेनिक उत्पादों की खुशबू

स्वयं सहायता समूहों ने किन्नौरी राजमा समेत अन्य उत्पाद के लगाए स्टॉल

मेले में यातायात नियमों के बारे में किया जागरूक

जाइका के तहत चलाई जा रही 24 आय सृजन गतिविधियां : गुलेरिया

शिमला, 16 सितम्बर (ब्यूरो) : अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) वानिकी परियोजना नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत लोगों की आर्थिकी में सुधार के लिए स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लगभग 24 आय सृजन गतिविधियां चलाई जा रही हैं, जिनमें मुख्यत: मशरूम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पत्तियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा सेपू बड़ी, टौर की पत्तलें हैं, जिसमें स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की आजीविका में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है। यह बात गुलेरिया ने प्रदेश विधानसभा में अध्यक्ष कुलदीप पठानिया से शिष्टाचार भेंट के दौरान कही। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष को हिमाचल प्रदेश वन परिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

www.jagran.com

सार संक्षेप

कार्यशाला में औषधीय पौधों का महत्व बताया

मशरूम की खेती कर सशक्त हुई हिमाचल की महिलाएं

पंजाब केसरी MON,25 SEPTEMBER 2023 EDITION: MANDI KESARI, PAGE NO. 2

उद्यमी बनकर करें पत्तल बनाने का काम

भटवाड़ वार्ड में रिटायर्ड डी.एफ.ओ. वी.पी. पठानिया ने किया महिलाओं से आग्रह

पंजाब केसरी SAT,16 SEPTEMBER 2023 EDITION: MANDI KESARI, PAGE

जाइका के तहत चलाई जा रही 24 आय सृजन गतिविधियां : गुलेरिया

खाइयों में भरा पानी पौधों के लिए बनेगा संजीवनी

किन्नौरी पट्टी से निर्मित कोट व चोली की खूब हुई बिक्री

दो लाख हेक्टेयर वन भूमि पर लाएंगे हरियाली

जाइका प्रोजेक्ट के कार्यों को ग्रासरूट पर पहुंचाने के निर्देश, नर्सरियों पर ...

जाइका प्रोजेक्ट से शीत मरुस्थल में आ रहीं हरियाली

हिन्दुस्थान समाचार Hindusthan Samachar

16 Sep 2023, 23:53 HRS IST

विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया को करवाया जाइका परियोजना के कार्यों से अवगत

शिमला, 16 सितम्बर (हि.स.)। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका वानिकी परियोजना) नागेश कुमार गुलेरिया ने शनिवार को हिमाचल प्रदेश विधानसभा में अध्यक्ष कुलदीप पठानिया से शिष्टाचार भेंट की। गुलेरिया ने विधानसभा अध्यक्ष को जाइका वानिकि परियोजना का स्मृति चिन्ह भेंट किया।

उद्यमी बन करें पत्तल बनाने का काम

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को दिए टिप्स, आर्थिकी सुदृढ़ करने पर जोर

प्रदेश के 65 सहायता समूहों ने एक साल में कमाए 12 लाख, मशरूम की खेती के लिए बन रहा अलग क्लस्टर

मशरूम की खेती कर सशक्त बन रहीं महिलाएं

शक्ति एसएचजी ने एक दिन में तैयार किया 20 किलो मशरूम

लाहौल-स्पीति में तापमान शून्य से नीचे

जाइका वानिकी परियोजना

विस्तृत जानकारी के लिए संर्म्पक करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नज़दीक हिमाचल प्रदेश मिल्कफैड कॉर्पोरेशन, टुटू शिमला-11, हिमाचल प्रदेश दूरभाष : 0177-2838217,

ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाईट : https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष : 1902 -226636, ईमेल: pdjicakullu@gmail.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्था क्षमता उत्थान इकाई

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर दूरभाष : 01782-234689, ईमेल : dpdrmp2018@gmail.com